॥ श्रीहरिः ॥

बाल-अमृत-वचन

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

बाल-अमृत-वचन

विद्या

विद्या धन उद्यम बिना कहौ जु पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यौं पंखा को पौन॥
करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिलपर परत निसान॥
सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़ै, बिन खरचे घटि जात॥
नहीं रूप कछु रूप है, विद्या रूप निधान।
अधिक पूजियत रूप तें, बिना रूप विद्वान॥
विद्या धन सब धनन तें, अति उत्तम ठहराइ।
छीन न कोऊ सकत है, चोर न सकत चुराइ॥
उत्तम विद्या लीजिये, जदपि नीच पै होय।
पड़ो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय॥
पढ़िबे में मन दीजिये, विद्या हो भरपूर।
गुरु की सेवा कीजिये, मन तें छल करि दूर॥
नहिं धन धन है बुध कहैं, विद्या वित्त अनूप।
चोरि सके नहिं चोर हू, छोरि सकै नहिं भूप॥
धन तें विद्या धन बड़ो, रहत पास सब काल।
देय जितो बाढ़ै तितो, छोर न सकत नृपाल॥

विद्यावंतहिं चाहिये, पहिले धर्मविचार।
तासों दोऊ लोक को, सधत सुद्ध ब्यवहार॥
विद्या पढ़ि करतो फिरै, औरन को अपमान।
नारायन विद्या नहीं, ताहि अविद्या जान॥
विद्या तें बाढ़त विनय, नै तें बाढ़त प्रेम।
प्रेम तें हो हरि कौ मिलन, यह विद्या कौ नेम॥

दीन-दुःखियोंके साथ व्यवहार

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँससे, लोह भसम होइ जाय॥
दुखिया जनि कोउ दूखवै, दुखवै अति दुख होय।
दुखिया रोइ पुकारिहै, सब गुड़ माटी होय॥
हरी डाल न तोड़िये, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना-सा जिव जान॥
जे दुखिया संसारमें खोवो तिनका दुःख।
दरिदर सौंप मलूक को, लोगन दीजे सुक्ख॥
जननी सदा सँभारती, लखि रोगी संतान।
तैसेहि दीनहि नित लखैं दीनबंधु भगवान॥
जैसे जननिहि अधिक प्रिय रोगी निर्बल पूत।
तैसे ही भगवान को दीन-पियारे पूत*॥
दुखियन को नहिं कछु गनै, देहि उनहिं संताप।
ते प्रभु के अति कोप तें भोगैं नित्य त्रिताप॥
जे दुखियन कौं देहि सुख, सदा करैं सुचि प्रीत।
ते अति ही प्रिय राम के, ज्यों जननिहि सुत मीत॥

---

* पूत—पवित्र।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥
परहित बस जिन्ह के मन माहीं । तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
पर उपकार बचन मन काया । संत सहज सुभाउ खगराया ॥

क्षमा

क्षमा खड्ग लीन्हें रहै, खल को कहा बसाय।
अगिन परी तृन रहित थल आपहि ते बुझि जाय॥
जो मूरख निंदा करै, पंडित की नहिं हानि।
रवि पर धूरि उड़ाइये, परै अपुन पर आनि॥
क्षमा बड़ेन को होत है, छोटन कौं उतपात।
कहा विष्नु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात॥
क्षमा वही पहिचानिये, जामें क्रोध न होय।
छमै सहज अपराध सब, करै भलाई जोय॥
दोष बड़े अति, दंडकी सक्ति अहै निज माहि।
दंड न दै छमि दोस सब, उलटे सुख दे ताहि॥

मधुर और सत्य वचन

ऐसी बानी बोलिये, मनका आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय॥
आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिये, वही एक की एक॥
मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्त्रवन द्वार ह्वै संचरै सालै सकल सरीर॥
बोलत ही पहिचानिये, साहु चोरको घाट।
अंतर की करनी सबै निकसै मुखकी बाट॥
साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है ताके हिरदै आप॥
रोष मिटै कैसे कहत, रिस उपजावन बात।
ईंधन डारे आग में, कैसे आग बुझात॥
'सम्मन' मीठी बात सों होत सबै सुख पूर।
जेहि नहिं सीखो बोलिबो, तेहि सीखो सब धूर॥
कबहुँ न भाषिय कटु बचन, बोलिय मधुर सुजान।
जेहि तैं नर आदर करैं, होय जगत कल्यान॥
कागा का को धन हरै, कोयल का कौं देय।
मीठी बानी बोलकर, जग अपनो करि लेय॥
'तुलसी' मीठे बचन तें सुख उपजत चहुँ ओर।
बसी करन एक मंत्र है तजि दे बचन कठोर॥
रहिमन रिस कह छाँड़ि कै, करहु गरीबी भेष।
मीठे बोलहु, नै चलहु, सबै तुम्हारो देस॥
रोष न रसना खोलिये, बरु खोलिय तलवार।
सुनत मधुर परिनाम हित बोलिय बचन बिचार॥

समझ बिचारै बोलना, समझ बिचारै चाल।
समझ बिचारै जागना, समझ बिचारै ख्याल॥
नारायन या जगत में दोइ बस्तु है सार।
सब सों मीठो बोलिबो, करिबो पर उपकार॥
बोली तो अनमोल है, जो कोइ जाने बोल।
हिये तराजू तौलकर, तब मुख बाहर खोल॥
मुँह पर मीठो बोलिबो, पाछे करिबो घात।
यह असुरन की रीति है, करै बड़ो उत्पात॥
मुँह मधु अंतर बिष भरे, तिनहिं न मानिय मीत।
छल प्रपंच अरु ढोंग रचि जे दिखात अति प्रीत॥
सत्य कहै, अमृत झरै, सीतल करै जो हीय।
सोइ साँचो हितु जानियै, सुख पहुँचावै जीय॥
मित हित सत्य मधुर बचन जो जन जानै बोल।
सो सब जग कौं बस करै, देइ मुक्ति-मग खोल॥
जो जानै सोई कहै, रटै रैन दिन राम।
करै न काहू को अहित सोइ सत्य सुखधाम॥

उत्तम व्यवहार

जो तो कौं काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वा को है तिरसूल॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न पाया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न होय॥
दोष पराये देखकर, चले हसंत हसंत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत॥
फेर न होइहै कपट सों, जो कीजै व्यवहार।
जैसे हाँड़ी काठ की चढ़ै न दूजी बार॥
मन सों जग को भल चहै, हिय छल रहै न नेक।
सो सज्जन संसारमें, जिनके बिमल बिबेक॥
झगड़ा कबहुँ न कीजिये, सब सन रखिये प्रीति।
झगड़े में घर जात है, सत्य बचन परतीति॥
आपु आपु कहँ सब भलो, दूजे कहँ कोइ कोइ।
'तुलसी' सब कहँ जो भलो, सुजन सराहिय सोइ॥
संत कष्ट सहि आपुही, सुखी करै जु समीप।
आप जरै पै और को, करै उजेरो दीप॥
बड़े न लोपैं लाज कुल, लोपैं नीच अधीर।
उदधि रहै मर्याद में, बहै उमड़ि नदनीर॥
जो तू चाहै अधिक रस, सीख ईखसे लेय।
जो तोकों अनरस करै, ताहि अधिक रस देय॥
जे ते जग में जीव हैं, राखै सब सों हेत।
को जानै केहि काल में, बिधि काको सँग देत॥
'तुलसी' या संसार में भाँति-भाँति के लोग।
सबसों हिलमिल चालिये, नदी नाव संजोग॥

जो तोकौं काटा बुवै वाहि बोय तू फूल।
सुंदर सुमन सुगंध तें मिटै उभय-हिय-सूल॥
जो चाहै हित सीखिबो तो तरु तें सिख लेय।
पाहन हनें सुमधुर फल बिटप सहज ही देय॥
काटै बस्तु बनै सुखद, जारै भोजन देत।
स्वयं घाम बरिखा सहै, छाया-सुख सब देत॥

नम्रता

कबिरा नवै सो आप को, पर को नवै न कोय।
घालि तराजू तौलिये, नवै सो भारी होय॥
अभिमानी नाहर बड़ो, भरमत फिरत उजार।
'सहजो' नन्ही बाकरी, प्यार करत संसार॥
भली गरीबी नवनता, सकै न कोई मार।
'सहजो' रुई कपास की, काटै न तरवार॥
रीति प्रीति सबसों भली, बैर न हित मित गोत।
रहिमन याही जनम कै, बहुरि न संगति होत॥
होय नम्र मन बचन सों देइ सबहि सनमान।
सो नर सर्वप्रिय सदा छोह करै भगवान॥
मधुर बिनययुत बचन सों सब जग कौं सुख देत।
सबकौं अमिय पियाय सो जग बस में कर लेत॥
नम्र पुरुष प्रिय राम कौं, नित लह राम प्रसाद।
अभिमानी निज दोष ते भोगै सदा विषाद॥

क्रोधका त्याग

‘सहजो’ क्रोधी अति बुरो, उलटी समझै बात।
सबही सों ऐंठो रहैं, करै बचन की घात॥
कूकर ज्यों भूँकत फिरै, तामस मिलवाँ बोल।
घर बाहर दुख रूप है, बुधि हू डाँवा डोल॥
क्रोध हरै सुख सांति को अंतर प्रगटै आग।
नैन बैन मुख बीगड़े पड़ै सील पर दाग॥
गुरजन, पुरजन, प्रिय-सुजन सब सों टूटै नेह।
पास पड़ोसीहू लड़ै, बरसै कुबचन मेह॥
मोह बढ़े, स्मृति नष्ट हो, होय बुद्धि को नास।
लोक और परलोक महँ दुख को होय प्रकास॥
जाके मन उपजै प्रथम ताहि जरावै जोर।
मुख तें भड़ भड़ नीसरै दुख उपजै चहुँ ओर॥
छमा सस्त्र सों क्रोध कौ करै सफल प्रतिकार।
सो सब सुख साधन लहै, सहज होइ भव-पार॥

संतोष और निर्लोभता

रूखा सूखा खाइ कै, ठंढा पानी पीव।
देखि बिरानी चोपड़ी मत ललचावै जीव॥
लोभ न कबहूँ कीजिये, या मैं बिपति अपार।
लोभी को बिस्वास नहिं, करे कोऊ संसार॥
लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान।
तीरथ नहिं मन सुद्धि सम बिद्या सम धन आन॥
लोभ मूल है दुःख को, लोभ पाप को बाप।
लोभ-फँसे जे मूढ़ जन सहैं सदा संताप॥
मिलै परम सुख ताहि कौं जाके मन संतोष।
येन केन विधि सौं सदा यथा लाभ जेहि तोष॥

सत्संगसे लाभ और कुसंगसे हानि

कबीर संगत साधु की, हरै और की ब्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि॥
मारी मरै कुसंग की ज्यों केले ढिग बेर।
वह हाले वह चीरई, साँकट संग निबेर॥
रहे समीप बड़ेन के, होत बड़ो हित मेल।
सबही जानत बढ़त है, वृक्ष बराबर बेल॥
जिहि प्रसंग दूषन लगे, तजिये ताको साथ।
मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ॥
उत्तम जन सो मिलत ही, अवगुन सो गुन होय।
घन सँग खारो उदधि मिलि, बरसै मीठो तोय॥
होत सुसंगति सहज सुख, दुख कुसंगके थान।
गंधी और लुहारकी, बैठो देखि दुकान॥
जाहि बड़ाई चाहिये, तजै न उत्तम साथ।
ज्यों पलास सँग पान के, पहुँचै राजा हाथ॥
कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग।
पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारै अंग॥
करिये विद्यावंत को, सेवन औ सह बास।
तासों आवै गुन अमित, अवगुन होहिं बिनास॥
असत संगके बास सों, गुन अवगुन ह्वै जात।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सबहिं बुझात॥
करिय नीच सह बास नहिं, जे अधिकाय मलीन।
मति बिगरत आदर घटत, होत धरम हू छीन॥
बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो परोस॥

रहिमन उजली प्रकृति कहँ, नाहिं नीच कर संग।
करिया बासन कर गहे, कारिख लागत अंग॥
रहिमन ओछे नरन तें तजहु बैर औ प्रीत।
काटे चाटे स्वान के दुहूँ भाँति बिपरीत॥
जानि बूझि साँचो तजै, करै झूठ सों नेहु।
ताकी संगत हे प्रभू सपनेहू मत देहु॥
संगति ऐसी कीजिये, जहवाँ उपजै ज्ञान।
पलटू तहाँ न बैठिये, घर की होवै हानि॥
सतसंगतिमें जाइ के, मन को कीजै सुद्ध।
पलटू उहाँ न जाइये, उपजे जहाँ कुबुद्धि॥
नारायन कीजै सदा, दुष्ट संग को त्याग।
जिमि लुहार के ढिग परै, बदन चिंगारी आग॥
तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला इक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥
बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु रामपद होइ न दृढ़ अनुराग॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधीहूँ पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की कटै कोटि अपराध॥
साधुसंग वहि जानियै जौ भ्रम-तम दे मेट।
आँखि देइ मग मेलि सुचि चहै न पूजा भेंट॥
नरकबास बरु अतिहि भल जहँ अघ होहिं बिनास।
दुष्ट संग जनि देहु बिधि नव अघ करै बिकास॥
सुरसरि पाप सुताप ससि सुरतरु दैन्य-बिनास।
साधुसंग तीनों हरै अति सुख करै प्रकास॥
साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुन मय फल जासू॥
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा। बंदनीय जेहि जग जस पावा॥

मति कीरति गति भूति भलाई । जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ । लोकहु बेद न आन उपाऊ॥
बिनु सतसंग बिबेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥
सतसंगति मुद मंगल मूला । सोइ फल सिधि सब साधन फूला॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई । पारस परस कुधातु सुहाई॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहुँ बेद बिदित सब काहू॥
गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संगा॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं॥
धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई॥
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई॥

संत सभा झाँकी नहीं, कियौ न हरिगुन गान।
नारायन फिर कौन बिधि, तू चाहत कल्यान॥

उत्तम पुत्र

पितु आज्ञा तत्पर सदा, चलत आप कुल चाल।
पंडित विज्ञ विनीत सो, उत्तम सुत नर पाल॥
जनक वचन निदरत निडर, बसत कुसंगति माहिं।
मूरख सो सुत अधम है, तेहि जनमे सुख नाहिं॥
मातु पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धरि करहि सुभाय।
लहेउ लाभ तिन्ह जनम कर, नतरु जनम जग जाय॥
अनुचित उचित विचार तजि जे पालहिं पितु बैन।
ते भाजन सुख सुजसके बसहिं अमरपति ऐन॥
सोइ बड़भागी सुअन सुचि मातु पितहि सुख देइ।
तन-मन-धन अर्पन करै लहै पुन्य-पद सेइ॥
उत्तम सुत सोइ जानिये जो हरिभगत सुजान।
मातृ-पितृ कुल तारि दै करै विश्व-कल्यान॥
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥

मित्रता

सुख दुख अरु बिग्रह बिपति, यामें तजै न संग।
गिरिधरदास बखानिये, मित्र सोइ बर ढंग॥
सुख मैं सँग मिलि सुख करै, दुख मैं पाछो होय।
निज स्वारथकी मित्रता, मित्र अधम है सोय॥
आप करै उपकार अति, प्रति उपकार न चाह।
हियरो कोमल संत सम, सुहृद सोइ नरनाह॥
प्रीति सुखद है सुजनकी, दिन दिन होइ बिसेष।
कबहूँ मेंटे ना मिटै, जिमि पाहनकी रेख॥
कह 'रहीम' संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति-कसौटी जे कसे, सोई साँचे मीत॥
टूटे सुजन मनाइए, जो टूटै सौ बार।
रहिमन फिरि फिरि पोहिये, टूटै, मुक्ताहार॥
रहिमन यहि संसारमें, सब सों मिलिये धाइ।
ना जानै केहि रूपमें, नारायन मिलि जाइ॥
संगी साई कीजिये सुख दुख का साथी।
दादू जीवन मरन का सो सदा सँघाती॥
निज सिर मित्र-कलंक लै, सहै घोर अपमान।
निष्कलंक मित्रहि करे, उत्तम मित्र महान॥
मित्र-प्रान रक्षा करे, अर्पन कर निज प्रान।
कछु अदेय राखै नहीं, उत्तम मित्र महान॥
बिपति बटावै लोभ करि, संपति देय सुभाय।
मान बढ़ावै जस करै, सदा सुपंथ चलाय॥
छिपकर बालिहि बध कियो, लियो सुकंठ बचाय।
राघव जग निंदा सही, मित्रधर्म सरसाय॥

रघुबर साँचे मित्र हैं, स्वारथ रंचक नाहिं।
पाछे मेलि बिभीषनहि, सूल सह्यो हिय माहिं॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना॥
जिन्ह कें असि मति सहज नआई। ते सठ कत हठि करत मिताई॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा॥
देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई॥
बिपति काल कर सत गुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा॥
आगें कह मृदु बचन बनाई। पाछें अनहित मन कुटिलाई॥
जाकर चित अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई॥
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी॥

भगवान्पर भरोसा

अमर बेलि बिनु मूल की, प्रतिपालत जो ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिये काहि॥
रन बन ब्याधि बिपत्तिमें, रहिमन मरउ न रोय।
जो रच्छक जननी-जठर, सो हरि गये न सोय॥
समय दसा कुल देखि के, लोग करत सनमान।
रहिमन दीन अनाथ के, तुम बिनु को भगवान॥
मनि मानिक महँगे किये, सस्ते तृन जल नाज।
रहिमन याते कहत हैं, राम गरीबनेवाज॥
बिगरी जनम अनेक की, सुधरै अब हीं आजु।
होहि राम को, नाम जपु तुलसी तजि कुसमाजु॥
बड़ो भरोसो राम को, बड़ी राम की आस।
सदा सफल सब थल रहे, जो उर कर बिस्वास॥
एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।
एक राम घनस्याम हित, चातक तुलसीदास॥
जिनहिं भरोसो रामको, तिनहिं न ब्यापहि क्लेश।
राम सदा रच्छा करैं, धरि धरि नित नव बेश॥

राम-नाम

राम-नामके सुमिरते, अधम तरे संसार।
अजामील गनिका सुपच, सदना सबरी नार॥
राम-नामके सुमिरते, उधरे पतित अनेक।
कह कबीर नहिं छोड़िये, राम-नाम की टेक॥
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु बिचार।
श्रीरघुनायक नाम तजि, नाहिन आन अधार॥
कृष्ण नाम अति गुप्त धन, पावै बिरला संत।
करै नहीं जो कामना, दिन दिन होय अनंत॥
रसना सापिन बदन बिल जे न जपहिं हरि नाम।
तुलसी प्रेम न राम सों ताहि बिधाता बाम॥
राम-नाम अवलंब बिनु परमारथ की आस।
बरसत बारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकास॥
राम-नाम रति राम गति राम-नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल चहुँ दिसि तुलसीदास॥
प्रीति प्रतीति सुरीति सों राम-नाम जपु राम।
तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिनाम॥
नाम जपत कुष्ठी भला चुइ चुइ परे जो चाम।
कंचन देह केहि काम की जा मुख नाहीं नाम॥
भयनासन दुर्मतिहरन कलिमहँ हरि को नाम।
निसिदिन नानक जो जपे सफल होइ तेहि काम॥
तुलसी भगत सुपच भलौ भजै रैन दिन राम।
ऊँचो कुल केहि काम को जहाँ न हरि को नाम॥
तुलसी जाके बदन तें धोखेहुँ निकसत राम।
ताके पग की पगतरी मेरे तन को चाम॥

दासरता एक नाम सों उभय लोक सुख त्यागि।
तुलसी न्यारो ह्वै रहै दहै न दुख की आगि॥
राम-नाम को अंक है सब साधन है सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं अंक रहे दसगून॥
राम-नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।
जापकजन प्रहलाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल॥
राम-नाम जपते रहौ जब लगि घटमें प्रान।
कबहूँ दीनदयाल के भनक परैगी कान॥
नाम राम को कलपतरु कलि कल्यान निवास।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदास॥
राम-नाम मनि दीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर॥

नीतिके उपदेश

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगो कब्ब॥
या दुनियामें आइ कै, छाड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना हो सो लेइ लै, उठी जात है पैठ॥
कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै और ठगे दुख होय॥
जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ॥
एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
जो गहि लेवै मूलको, फूलै फूल अघाय॥
अपनी पहुँच बिचारि कै, करतब करिये दौर।
तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर॥
बुरे लगत हित के बचन, हियै बिचारो आप।
करुई भेषज बिन पिये, मिटै न तनको ताप॥
करै बुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते होय॥
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फलै, केतिक सींचो नीर॥
पराधीनता दुख महा, सुख जगमें स्वाधीन।
सुखी रमत सुक बन बिसे, कनक पींजरे दीन॥
कारज करिय बिचारि कै, करम लिखी सो होय।
पाछै उपजै ताप नहिं, निंदा करै न कोय॥
उद्यम कीजै जगतमें मिलै भाग्य अनुसार।
मोती मिलै कि संख कर, सागर गोता मार॥

बिन उद्यम नहिं पाइये, कर्म लिख्यो हू जौन।
बिन जलपान न जाइहै, प्यास गंगजल भौन॥
जाको राखै साँइयाँ, मारि सकै नहिं कोय।
बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होय॥
तुलसी जे कीरति चहैं, पर-कीरतिको खोइ।
तिनके मुँह मसि लागिहै, मुए न मिटिहै धोइ॥
तुलसी या संसारमें, पाँच रतन हैं सार।
सज्जन-संगति, हरिभजन, दया, दैन्य, उपकार॥
आलस कबहुँ न कीजिये, आलस अरि सम जानि।
आलससे विद्या घटै, सुख सम्पतिकी हानि॥
आलस है बिन रोगको महारोग नर देह।
आलस ही तें नसत हैं, सुख-सम्पति अरु गेह॥
तेहि प्रमान चलिबो भलो, जो सब दिन ठहराइ।
उमड़ि चलै जल पार ते, जो 'रहीम' बढ़ि जाइ॥
'रहिमन' बिद्या, बुधि नहीं, नहीं धरम, जस दान।
जन्म वृथा भूपर धरेउ, पसु बिनु पूँछ बिषान॥
बड़े बड़ाई ना करैं, बड़े न बोलैं बोल।
'रहिमन' हीरा कब कहै, लाख टका है मोल॥
बड़े बड़ाई न तजैं, लघु 'रहीम' इतराइ।
राइ करौंदा होत है, कटहर होत न राइ॥
नीति अनीति बड़े सहैं, रिस भरि देत न गारि।
भृगु उर दीनी लात की, हरि कीनी मनुहारि॥
रहिमन बित्त अधर्म कर जात न लागै बार।
चोरी करि होरी रची, भई छिनकमें छार॥
हंसा पयको काढ़ि लै, छीर नीर निरवार।
ऐसे गहै जो सार कौं, सो जन उतरै पार॥
तुलसी असमय के सखा, धीरज धरम बिबेक।
साहित साहस सत्यब्रत, रामभरोसो एक॥

मुखिया मुख सो चाहिये, खान-पान को एक।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक॥
मलूक बाद न कीजिये, क्रोधै देउ बहाय।
हार मानु अनजानते बकि बकि मरै बलाय॥
सुंदर मानुष देह की महिमा कहिये काहि।
जाको चाहैं देवता, क्यों खोवत है ताहि॥
पलटू यह साँची कहै, अपने मनका फेर।
तुझे पराई क्या परी अपनी ओर निबेर॥
तेरे भावें कछु करौ, भलो बुरो संसार।
नारायन तू बैठिके अपनो भवन बुहार॥
नारायन दो बातको, दीजै सदा बिसार।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार॥
दो बातन को भूल मत, जो चाहै कल्यान।
नारायन इक मौत को दूजे श्रीभगवान॥
धन जोबन यों जायँगे, जा बिधि उड़त कपूर।
नारायन गोपाल भज, क्यों चाटै जगधूर॥
बहुत गयी थोरी रही, नारायन अब चेत।
काल चिरैया चुगि रही, निसिदिन आयू खेत॥
दुखमें सुमिरन सब करै, सुखमें करै न कोय।
जो सुखमें सुमिरन करै, दुख काहे को होय॥
कहा करै बैरी प्रबल, जो सहाय रघुबीर।
दस हजार गजबल घट्यो, घट्यो न दसगज चीर॥

नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही॥
परम धरम श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गरीसा॥
सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी॥
सब कर निंदा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं॥

गिरधरदासकी कुंडलिया

दौलत पाय न कीजिये, सपनेमें अभिमान।
चंचल जल दिन चारिको, ठाँउ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे बचन सुनाय, बिनय सबही की कीजै॥
कह गिरधर कबिराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन सम दिन चारि रहत सबही के दौलत॥

साईं ये न बिरोधिये, छोट बड़े सब भाइ।
ऐसे भारी वृक्ष को, कुल्हरी देत गिराइ॥
कुल्हरी देत गिराइ, मारिकै जमी गिराई।
टूक-टूक कै काटि समुद्रमें देत बहाई॥
कह गिरधर कबिराय, फूट जेहि के घर आई।
हिरनाकस्यप कंस गये, बलि रावन साँई॥

बिना बिचारै जो करै, सो पाछे पछताय।
काम बिगारै आपनो जगमें होत हँसाय॥
जगमें होत हँसाय, चित्तमें चैन न पावै।
खान-पान सनमान, राग-रँग मनहिं न भावै॥
कह गिरधर कबिराय, दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माँझ, कियो जो बिना बिचारे॥

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज मैं, ताही में चित देइ॥
ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसै न कोइ, चित्तमें खता न पावै॥
कह गिरधर कबिराय यहै करु मन परतीती।
आगे को सुख समुझ, होइ बीती सो बीती॥

साईं अपने भ्रात को कबहुँ न दीजै त्रास।
पलक दूर नहिं कीजिये, सदा राखिये पास॥
सदा राखिये पास, त्रास कबहूँ नहिं दीजै।
त्रास दई लंकेस, ताहि की गति सुन लीजै॥
कह गिरधर कबिराय, राम सों मिलियो जाई।
पाय बिभीषन राज लंकपति बाज्यो साईं॥

साईं समय न चूकिये, यथाशक्ति सनमान।
को जानै को आइहै, तेरी पौरि प्रमान॥
तेरी पौरि प्रमान समय असमय तकि आवै।
ता को तू जिय खोलि हृदय भरि कंठ लगावै॥
कह गिरधर कबिराय, सबै यामें सुधि आई।
सीतल जल फल फूल समय जनि चूको साँई॥

सर्वश्रेष्ठ कौन है?

गाली सुनकर भी, जो मनमें जरा नहीं दुख पाता है।
क्रोध दिलानेपर भी, जिसको क्रोध नहीं कुछ आता है॥
कड़वे वचन कदापि न कहता मर्मबेध करनेवाले।
बचन सत्य हित मधुर बोलता अमरित बरसानेवाले॥
पर-दुखसे ही दुखी, सदा जो पर-सेवा करता रहता।
दुःख उठाकर स्वयं, दूसरोंके दुख नित हरता रहता॥
कपट-दम्भ-अभिमान छोड़, जो सबका करता है सम्मान।
हरिका हो, जो भजता हरिको, परम धरम जीवनका मान॥
अपने शुभ आचरणोंसे जो हरता है पर-दुख—अज्ञान।
जगमें सबसे श्रेष्ठ वही है, वही जगत्‌में सदा महान्॥

॥ श्रीहरि: ॥

नित्यपाठ साधन-भजन एवं कर्मकाण्ड-हेतु

कोड	पुस्तक
592	**नित्यकर्म-पूजाप्रकाश**
1627	**रुद्राष्टाध्यायी**-सानुवाद
1417	**शिवस्तोत्ररत्नाकर**
1623	ललितासहस्त्रनामस्तोत्रम्
610	**व्रतपरिचय**
1162	**एकादशी-व्रतका माहात्म्य**—मोटा टाइप
1136	**वैशाख-कार्तिक-माघमास-माहात्म्य**
1588	**माघमासका माहात्म्य**
1367	**श्रीसत्यनारायण-व्रतकथा**
052	**स्तोत्ररत्नावली**—सानुवाद
1629	,, ,, सजिल्द
1567	**दुर्गासप्तशती**—मूल मोटा (बेड़िया)
117	,, मूल, मोटा टाइप
876	,, मूल गुटका
1727	,, मूल, लघु आकार
1346	,, सानुवाद मोटा टाइप
118	,, सानुवाद
489	,, सानुवाद, सजिल्द
1281	,, (विशिष्ट सं०)
866	,, केवल हिन्दी
1161	,, केवल हिन्दी मोटा टाइप, सजिल्द
1593	**अन्त्यकर्म-श्राद्धप्रकाश**

कोड	पुस्तक
1416	**गरुडपुराण-सारोद्धार** (सानुवाद)
819	**श्रीविष्णुसहस्त्रनाम**-शांकरभाष्य
206	**श्रीविष्णुसहस्त्रनाम**-सटीक
509	**सूक्ति-सुधाकर**
226	**श्रीविष्णुसहस्त्रनाम**-मूल
207	**रामस्तवराज**—(सटीक)
211	**आदित्यहृदयस्तोत्रम्**
224	**श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्र**
231	**रामरक्षास्तोत्रम्**—
1594	**सहस्त्रनामस्तोत्रसंग्रह**
715	**महामन्त्रराजस्तोत्रम् नामावलिसहितम्**
1599	**श्रीशिवसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1600	**श्रीगणेशसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1601	**श्रीहनुमतसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1663	**श्रीगायत्रीसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1664	**श्रीगोपालसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1665	**श्रीसूर्यसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1706	**श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1704	**श्रीसीतासहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1705	**श्रीरामसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1708	**श्रीराधिकासहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1709	**श्रीगंगासहस्त्रनामस्तोत्रम्**
1707	**श्रीलक्ष्मीसहस्त्रनामस्तोत्रम्**

कोड	पुस्तक
704	**श्रीशिवसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
705	**श्रीहनुमत्सहस्त्रनामस्तोत्रम्**
706	**श्रीगायत्रीसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
707	**श्रीरामसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
708	**श्रीसीतासहस्त्रनामस्तोत्रम्**
709	**श्रीसूर्यसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
710	**श्रीगङ्गासहस्त्रनामस्तोत्रम्**
711	**श्रीलक्ष्मीसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
712	**श्रीगणेशसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
713	**श्रीराधिकासहस्त्रनामस्तोत्रम्**
810	**श्रीगोपालसहस्त्रनामस्तोत्रम्**
495	**दत्तात्रेय-वज्रकवच**—सानुवाद
563	**शिवमहिम्नस्तोत्र**
054	**भजन-संग्रह**
229	**श्रीनारायणकवच एवं अमोघ शिवकवच**
140	**श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली**
142	**चेतावनी-पद-संग्रह**-(दोनों भाग)
144	**भजनामृत**-६७भजनोंका संग्रह
1355	**सचित्र-स्तुति-संग्रह**
1214	**मानस-स्तुति-संग्रह**
1344	**सचित्र-आरती-संग्रह**
1591	**आरती-संग्रह**—मोटा टाइप
153	**आरती-संग्रह**
208	**सीतारामभजन**
221	**हरेरामभजन**—दो माला (गुटका)
385	**नारद-भक्ति-सूत्र एवं शाण्डिल्य भक्ति-सूत्र,** सानुवाद
222	**हरेरामभजन—**
576	**विनय-पत्रिकाके पैंतीस पद**

कोड	पुस्तक
225	**गजेन्द्रमोक्ष**-सानुवाद, हिन्दी पद्य, भाषानुवाद
1505	**भीष्मस्तवराज**
699	**गंगालहरी**
1094	**हनुमानचालीसा** भावार्थसहित
1181	**हनुमानचालीसा मूल** (रंगीन)
227	,,—(पॉकेट साइज)
695	**हनुमानचालीसा—** (लघु आकार)
1524	**हनुमानचालीसा—** विशिष्ट सं० (लघु आकार)
228	**शिवचालीसा—**
1525	**हनुमानचालीसा—** अति लघु आकार
232	**श्रीरामगीता**
383	**भगवान् कृष्णकी कृपा तथा दिव्य प्रेमकी....**
1185	**शिवचालीसा—**
851	**दुर्गाचालीसा, विन्धेश्वरीचालीसा**
1033	,, लघु आकार
203	**अपरोक्षानुभूति**
139	**नित्यकर्म-प्रयोग**
524	**ब्रह्मचर्य और संध्या-गायत्री**
1471	**संध्या, संध्या-गायत्रीका महत्त्व और ब्रह्मचर्य**
210	**सन्ध्योपासनविधि एवं तर्पण-बलिवैश्वदेवविधि—** मन्त्रानुवादसहित
236	**साधकदैनन्दिनी**
614	**सन्ध्या**